सांध्य दैनिक
# 4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 22 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, सोमवार 23 फरवरी, 2026
मूल्य ₹ 3/-

हमेशा ध्यान में रखिये की आपका सफल होने का संकल्प किसी भी और संकल्प से महत्वपूर्ण है।
-अब्राहम लिंकन

टी20 विश्वकप : दबाव में बिखरी भारतीय... 7 | महाराष्ट्र-यूपी से लेकर तमिलनाडु... 3 | पीडीए की आंधी से हिलेगी सत्ता... 2

# जेएनयू में मिडनाइट फाइट

# विश्वविद्यालय की बनती नई पहचान लाठी-डंडे खूनी घमासान

» विश्वविद्यालय को योजनाबद्ध तरीके से अराजकता का अड्डा साबित करने की मुहिम

» लेफ्ट और एबीवीपी स्टूडेंटस के बीच भिड़ंत, मारपीट पत्थरबाजी एक-दूसरे पर हमले का आरोप

» समानता मार्च में छात्र कर रहे थे वीसी के इस्तीफे की मांग

» समानता मार्च से मिडनाइट हिंसा तक कैसे भड़की जेएनयू की आग?

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में दो छात्र संगठनों का वैचारिक टकराव बीती रात हिंसक झड़प में बदल गया। दर्जनों छात्रों को चोटें आयी, खून बहा और हाथ पैर टूटे। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले भी कई बार इस प्रकार की खबरों से दो चार होना पड़ा है।

सवाल यही है कि आखिर जिस विश्वविद्यालय की साख पूरी दुनिया में हो वहां इस प्रकार की घटनाएं क्यों घटित हो रही है। सवाल यह भी है कि यह घटनाएं हैं या फिर किसी बड़ी रणनीति की साजिश। क्योंकि आधी रात को लाठी-डंडों, पत्थरों और खून से सना जेएनयू यह बता रहा है कि अब लड़ाई सिर्फ छात्र संगठनों के बीच नहीं रही अब यह लड़ाई विचार बनाम सत्ता की बन चुकी है।

## बार-बार हिंसा का अखाड़ा क्यों बन रहा है जेएनयू

सवाल सिर्फ यह नहीं है कि आधी रात को किसने किस पर हमला किया। असली सवाल यह है कि आखिर जेएनयू को बार-बार हिंसा के अखाड़े में क्यों बदला जा रहा है? क्या यह सिर्फ छात्र संगठनों की लड़ाई है या इसके पीछे एक बड़ी राजनीतिक रणनीति काम कर रही है। एक ऐसी रणनीति जिसका मकसद विश्वविद्यालयों से सवाल पूछने की संस्कृति को खत्म करना है। जेएनयू की यह जंग अब सिर्फ कैंपस की नहीं रही। यह जंग इस देश के भविष्य की है। जहां तय होगा कि विश्वविद्यालय विचारों के मंदिर रहेंगे या सत्ता के आदेशों के मौन केंद्र बन जाएंगे।

## समानता मार्च से मिडनाइट हिंसा तक कैसे भड़की जेएनयू की आग?

जेएनयू में आधी रात को भड़की हिंसा की चिंगारी दिन में निकले एक विरोध मार्च से जुड़ी बताई जा रही है। यह मार्च कोई साधारण प्रदर्शन नहीं था बल्कि विश्वविद्यालय के कुलपति पर लगाए गए कथित जातिवादी टिप्पणियों के आरोपों के खिलाफ छात्रों का प्रतिरोध था। वामपंथी छात्र संगठनों ने इसे समानता मार्च का नाम दिया था। एक ऐसा मार्च जिसका उद्देश्य सिर्फ विरोध दर्ज कराना नहीं बल्कि विश्वविद्यालय प्रशासन को कठघरे में खड़ा करना भी था। रविवार शाम कैंपस में बड़ी संख्या में छात्र इकट्ठा हुए। उनके हाथों में पोस्टर थे नारों में आक्रोश था और मांग साफ थी कि कुलपति इस्तीफा दें। छात्रों का आरोप था कि विश्वविद्यालय प्रशासन न सिर्फ संवेदनशील मुद्दों पर चुप्पी साधे हुए है बल्कि जातीय असमानता से जुड़े मामलों को नजरअंदाज भी कर रहा है। समानता मार्च इसी असंतोष का सार्वजनिक विस्फोट था। यह मार्च कैंपस के कई प्रमुख इलाकों से होकर गुजरा और जैसे जैसे भीड़ बढ़ती गई माहौल में तनाव भी महसूस किया जाने लगा।

## छात्रों का आरोप एबीवीपी ने रास्ता रोका?

वामपंथी छात्र संगठनों का आरोप है कि मार्च जैसे ही आगे बढ़ा तभी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने रास्ता रोक लिया। उनका कहना है कि यह सिर्फ विरोध नहीं था बल्कि एक सोची समझी रोकथाम थी जिसका मकसद प्रदर्शन को बाधित करना और छात्रों को डराना था। आरोप है कि इसी टकराव के बाद दोनों पक्षों के बीच तीखी बहस शुरू हुई जो जल्द ही धक्का-मुक्की और हाथापाई में बदल गई। देखते ही देखते स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई और कैंपस के कई हिस्सों में अफरा-तफरी फैल गई।

## सत्ता से सवाल पूछने की प्रयोगशाला है जेएनयू

जेएनयू कभी सिर्फ एक विश्वविद्यालय नहीं रहा। यह हमेशा वह प्रयोगशाला रहा है जहां सत्ता से सवाल पूछना सिखाया जाता है। जहां गरीब का बेटा प्रधानमंत्री की नीतियों पर बहस करता है। जहां आदिवासी, दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक छात्र अपने अधिकारों की आवाज बनते है। लेकिन अब उसी विश्वविद्यालय को योजनाबद्ध तरीके से अराजकता का अड्डा साबित करने की मुहिम चलाई जा रही है। सवाल यह है कि क्या यह हिंसा स्वतः हो रही है या इसे एक नैरेटिव बनाने के लिए होने दिया जा रहा है? अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, जिसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का छात्र संगठन माना जाता है वर्षों से जेएनयू में अपनी वैचारिक जमीन तलाश रहा है। लेकिन यहां की ऐतिहासिक रूप से मजबूत वामपंथी छात्र राजनीति जिसका प्रतिनिधित्व स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया और अन्य वाम संगठनों ने किया है ने हमेशा इस विस्तार को चुनौती दी है। यही टकराव अब खुले संघर्ष में बदलता दिखाई दे रहा है। यह सिर्फ पोस्टर और भाषण की लड़ाई नहीं रही अब यह सड़कों पर खून और डर की लड़ाई बन चुकी है।

## एबीवीपी ने आरापों को खारिज किया

एबीवीपी ने इन आरोपों को पूरी तरह खारिज किया है। संगठन का दावा है कि उनके छात्र शांतिपूर्वक अपने हास्टल और अकादमिक गतिविधियों में व्यस्त थे जब अचानक वामपंथी संगठनों के कुछ कार्यकर्ताओं ने उन्हें निशाना बनाया। एबीवीपी के अनुसार हमला एकतरफा था और उनके छात्रों को उकसाने और डराने की कोशिश की गई। उनका कहना है कि वे सिर्फ अपनी सुरक्षा के लिए खड़े हुए थे न कि किसी हिंसा की शुरुआत करने के लिए।

## जेएनयू हमेशा असहज सवाल

सरकार के लिए जेएनयू हमेशा एक असहज सवाल रहा है। क्योंकि यह वह जगह है जहां छात्र सिर्फ डिग्री नहीं लेते वह सत्ता की नीतियों का विश्लेषण करते हैं उनकी आलोचना करते हैं और वैकल्पिक राजनीति की कल्पना करते हैं। सत्ता को ऐसे विश्वविद्यालयों से डर लगता है। क्योंकि सवाल पूछने वाले छात्र भविष्य में झुकने वाले नागरिक नहीं बनते। यही कारण है कि वर्षों से जेएनयू की छवि को व्यवस्थित रूप से राष्ट्र विरोधी, अराजक और समस्या ग्रस्त बताने की कोशिश की जा रही है। लेकिन इस लड़ाई में सबसे बड़ा नुकसान किसका हो रहा है? न सरकार का, न संगठनों का सबसे बड़ा नुकसान उन छात्रों का हो रहा है जो यहां पढ़ने आये हैं। जो अपने परिवार के सपनों को लेकर यहा स्टडी करने आये हैं उनकी किताबें अब डर के साए में बंद हो रही हैं। उसकी लाइब्रेरी अब विचारों की जगह संघर्ष का प्रतीक बन रही है। जेएनयू जो कभी ज्ञान का किला था अब वैचारिक कब्ज़े की जंग का मैदान बनता जा रहा है।

# पीडीए की आंधी से हिलेगी सत्ता : अखिलेश यादव

## » अखिलेश यादव का ऐलान 2027 में बदलेगा उत्तर प्रदेश का राजनीतिक भाग्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ के राजनीतिक गलियारों में बार फिर सियासी तापमान उस समय तेज हो गया जब समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर सीधा हमला बोलते हुए 2027 में सत्ता परिवर्तन का दावा कर दिया।

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय स्थित डॉ. राममनोहर लोहिया सभागार में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में अखिलेश यादव ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जैसे-जैसे जनता की पीड़ा बढ़ रही है, वैसे-वैसे पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) का आंदोलन मजबूत होता जा रहा है और लोग बड़ी संख्या में इससे जुड़ रहे हैं।

अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी दलितों, पीड़ितों और शोषितों की आवाज बनकर खड़ी है और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए पूरी तरह संकल्पित है। उनका कहना था कि संविधान और लोकतंत्र की रक्षा का असली संघर्ष अब सड़कों पर उतर चुका है और समाजवादी कार्यकर्ता इस लड़ाई को निर्णायक मोड़ तक पहुंचाने के लिए तैयार हैं। उन्होंने भरोसा जताया कि 2027 में उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी और राज्य को विकास और न्याय के रास्ते पर आगे बढ़ाया जाएगा। प्रेस वार्ता के दौरान पार्टी में शामिल होने वाले नए नेताओं और कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि यह जुड़ाव सिर्फ राजनीतिक विस्तार नहीं, बल्कि जनता के विश्वास का प्रमाण है। उन्होंने भाजपा सरकार पर तीखा हमला करते हुए कहा कि जनता अब इस सरकार को अस्वीकार कर चुकी है और बस चुनाव का इंतजार कर रही है।

### योग और सनातन की परंपरा का अर्थ आडंबर नहीं

धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि योग और सनातन की परंपरा का अर्थ आडंबर नहीं, बल्कि आचरण है। उन्होंने कहा कि गीता और गुरु नानक की शिक्षाएं त्याग और सादगी की बात करती हैं, लेकिन वर्तमान सत्ता इन मूल्यों का सम्मान नहीं कर रही। उन्होंने शंकराचार्य से जुड़े हालिया विवादों का जिक्र करते हुए कहा कि सनातन परंपरा में संतों और धर्माचार्यों का अपमान कभी स्वीकार्य नहीं रहा, लेकिन आज हालात बदल दिए गए हैं। विकास और पर्यावरण के मुद्दे पर भी उन्होंने भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि गोमती नदी की स्थिति लगातार खराब होती जा रही है और दूषित पानी के कारण लोग बीमार हो रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि समाजवादी सरकार के दौरान नदियों को साफ करने के लिए ठोस योजनाएं शुरू की गई थीं, लेकिन वर्तमान सरकार ने उन योजनाओं को आगे नहीं बढ़ाया। उन्होंने आरोप लगाया कि विकास के नाम पर भ्रष्टाचार की पाइपलाइन बिछाई जा रही है, जबकि जनता को बुनियादी सुविधाओं से वंचित रखा जा रहा है।

### फर्जी वीडियो से बीजेपी फैला रही है नफरत

अखिलेश यादव ने भाजपा पर सामाजिक तनाव फैलाने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि फर्जी वीडियो और झूठे प्रचार के माध्यम से समाज में नफरत का माहौल बनाया जा रहा है। उन्होंने कई घटनाओं का हवाला देते हुए कहा कि सरकार की प्राथमिकता जनता की सुरक्षा और कल्याण नहीं, बल्कि राजनीतिक लाभ है। सुरक्षा के मुद्दे पर भी उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों की सुरक्षा हटाकर उन्हें डराने की कोशिश की जा रही है, लेकिन समाजवादी पार्टी ऐसे दबावों से घबराने वाली नहीं है। उन्होंने कहा कि सत्ता का दुरुपयोग लोकतंत्र के लिए खतरा है, लेकिन समाजवादी कार्यकर्ता इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं।

### सत्ता के साथ संविधान की भी लड़ाई

अखिलेश यादव ने दृढ़ स्वर में कहा कि यह लड़ाई सिर्फ सत्ता की नहीं, बल्कि संविधान, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की है। उन्होंने विश्वास जताया कि जनता बदलाव चाहती है और आने वाला समय समाजवादी पार्टी के पक्ष में होगा। उनके इस आक्रामक तेवर ने साफ संकेत दे दिया है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में 2027 का चुनाव सिर्फ एक चुनाव नहीं, बल्कि विचारधाराओं और जनविश्वास की निर्णायक परीक्षा बनने जा रहा है।

# फडणवीस का विरोध तेज, चाय पार्टी का बहिष्कार

## » महाविकास अघाड़ी का बजट सत्र में आर-पार का एलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाविकास आघाड़ी (एमवीए) के नेताओं ने रविवार को एकमत से फैसला किया कि वह महाराष्ट्र विधानमंडल के बजट सत्र की पूर्व संध्या पर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस द्वारा बुलाई गई पारंपरिक चाय बैठक का बहिष्कार करेंगे। इसमें विजय वडेट्टीवार, भास्कर जाधव और आदित्य ठाकरे सहित कई नेताओं की सहमति शामिल है। बजट सत्र की शुरूआत आज से हो रही है। विपक्षी नेताओं ने कहा कि पारंपरिक चाय बैठक का बहिष्कार करने का फैसला सरकार में कथित भ्रष्टाचार, किसानों के प्रति उदासीन रवैये और 'लाडकी बहिन योजना' के तहत मासिक आर्थिक सहायता बढ़ाने के चुनावी वादे को पूरा न करने के विरोध में किया गया है।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने 28 जनवरी को बारामती विमान हादसे में अजित पवार की मौत पर भी सवाल उठाते हुए सरकार से स्पष्ट जानकारी देने की मांग की। उन्होंने पूछा कि यह हादसा था या इसके पीछे कोई साजिश थी? वडेट्टीवार ने कहा, भाजपा कभी नारा देती थी, महाराष्ट्र को कहां ले गए?' आज हम पूछते हैं कि महाराष्ट्र कहां खड़ा है? किसान और आम लोग किस हालत में हैं? राज्य नशे की गिरफ्त में है, यह चिंता का विषय है। बारामती विमान हादसे का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार की विमान हादसे में मौत हो गई। सरकार ने सिर्फ संक्षिप्त जानकारी दी और कहा कि इस पर सवाल न उठाए जाएं। हम सवाल क्यों न करें? पूरे देश में इस पर चर्चा हो रही है कि यह दुर्घटना थी या कुछ और। ऐसे में हम सत्र से पहले होने वाली चाय बैठक में क्यों शामिल हों?

### भ्रष्टाचार के आरोप चारों ओर

विधायक दल के नेता भास्कर जाधव ने भ्रष्टाचार के आरोप भी लगाए और कहा कि एनसीपी मंत्री नरहरि जिरवाल के निजी सहायक की गिरफ्तारी के बावजूद मंत्री ने इस्तीफा नहीं दिया। उन्होंने बिजली दरों में बढ़ोतरी का भी विरोध किया और कहा कि यह सरकार के पहले दिए गए राहत के आश्वासन के विपरीत है। शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे ने बुनियादी ढांचे की सुरक्षा पर सवाल उठाते हुए कहा कि मुलुंड में मेट्रो स्लैब गिरने जैसी घटनाओं से सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा हुई हैं। विधान परिषद में कांग्रेस के नेता सतेज पाटिल ने 86,000 करोड़ रुपए की शक्ति पीठ हाईवे परियोजना का विरोध किया और आरोप लगाया कि किसानों की आपत्ति के बावजूद भूमि सर्वेक्षण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एसीबी की कार्रवाई से भी कई सवाल खड़े होते हैं और सरकार को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

### कृषि नीतियों की आलोचना

उन्होंने कृषि नीतियों की भी आलोचना की और आरोप लगाया कि सरकार के फैसलों से सोयाबीन और कपास उत्पादक किसानों को नुकसान हुआ है। उन्होंने दावा किया कि मक्का का एमएसपी 2400 रुपए होने के बावजूद महाराष्ट्र में किसानों को 1,500 से 1,600 रुपए ही मिल रहे हैं। वडेट्टीवार ने कहा कि यवतमाल में एक महीने में 22 किसानों ने आत्महत्या की, जबकि मराठवाड़ा क्षेत्र में 76 किसानों ने जान दी। उन्होंने आरोप लगाया, यह सरकार किसान विरोधी है। इसलिए हमने चाय बैठक का बहिष्कार करने का निर्णय लिया है। शिवसेना (यूबीटी) विधायक दल के नेता भास्कर जाधव ने कहा कि अजित पवार की मौत को लेकर लोगों में संदेह है और सरकार की स्थिति स्पष्ट नहीं है। प्रेस कॉन्फ्रेंस की शुरुआत में शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी (एसपी) का कोई विधायक मौजूद नहीं था। हालांकि जाधव ने कहा कि विपक्ष एकजुट है। बाद में पूर्व विधायक मिलिंद कांबले भी प्रेस वार्ता में शामिल हुए। जाधव ने 'लाडकी बहिन योजना' का जिक्र करते हुए आरोप लगाया कि सरकार ने महिलाओं को आर्थिक सहायता का वादा कर वोट लिया, लेकिन अब राज्य के कर्ज का हवाला देकर योजना के लाभ सीमित किए जा रहे हैं। उन्होंने एक रुपए फसल बीमा योजना के क्रियान्वयन पर भी सवाल उठाए और कहा कि इससे किसानों को फायदा नहीं मिला।

# राजस्थान सरकार पर कांग्रेस का डबल अटैक

## » परीक्षा देने जा रही नाबालिग छात्रा के अपहरण की घटना ने पकड़ा तूल

## » दुष्कर्म और फिर निर्मम हत्या की रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा है कि प्रदेश में पर्ची सरकार के आने के बाद कानून व्यवस्था पूरी तरह वेंटिलेटर पर है। अशोक गहलोत का यह बयान काफी चर्चा में हैं क्योंकि इन दिनो राजस्थान में विधानसभा सत्र चल रहा है। गहलोत ने प्रदेश की भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रदेश में पर्ची सरकार के आने के बाद कानून व्यवस्था पूरी तरह वेंटिलेटर पर है।

अशोक गहलोत ने बीकानेर की घटना का जिक्र करते हुए भाजपा सरकार पर निशाना साधा। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पोस्ट में पूर्व सीएम ने लिखा कि बीकानेर के रणजीतपुरा में परीक्षा देने जा रही नाबालिग छात्रा के अपहरण, दुष्कर्म और फिर निर्मम हत्या की रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना ने मानवता को शर्मसार कर दिया है। यह केवल एक अपराध नहीं, बल्कि राजस्थान के माथे पर गहरा कलंक है। प्रदेश में पर्ची सरकार के आने के बाद कानून व्यवस्था पूरी तरह वेंटिलेटर पर है।

### अब डरने लगी हैं बेटियां

अशोक गहलोत ने कहा कि आज हालात यह है कि हमारी बेटियां घर से बाहर कदम रखने से भी डरने लगी हैं। आखिर राजस्थान को अपराध की किस आग में झोंक दिया गया है? उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को कोरी घोषणाओं और फोटोबाजी से बाहर निकलकर प्रदेश की कानून व्यवस्था को संभालना चाहिए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने कहा कि मेरी मांग है कि इस प्रकरण के दोषियों को तत्काल गिरफ्तार कर मामले की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में की जाए और अपराधियों को ऐसी कठोरतम सजा मिले जो एक नजीर बने। प्रदेश अब और चीखें नहीं सुन सकता।

### डोटासरा ने भी किया अटैक

कांग्रेस नेता गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि बीकानेर के रणजीतपुरा में सैन समाज की नाबालिग छात्रा की दुष्कर्म के बाद हत्या की खबर अत्यंत हृदयविदारक और पूरे प्रदेश को शर्मसार करने वाली है। परीक्षा देने गई 8वीं कक्षा की छात्रा को अगवा कर बर्बरता की गई। घटना को लेकर पूरे क्षेत्र में रोष व्याप्त है। भाजपा की भजनलाल सरकार महिला सुरक्षा के मुद्दे पर पूरी तरह विफल रही है। हालात इतने खराब हैं कि बच्चियां स्कूल जाने से डरने लगी हैं। सरकार जो गहरी नींद में सोई है, अब जागने का वक्त है। अपराधियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

# तमिलनाडु चुनाव में कांग्रेस का ज्यादा सीटों पर दावा!

## डीएमके-कांग्रेस सीट बंटवारे को लेकर अहम बातचीत शुरू, सीएम स्टालिन और वेणुगोपाल मिलेंगे करेंगे बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव की तैयारियां अब चरम पर हैं। सभी पार्टियां उम्मीदवारों को फाइनल करने में जुटी हैं। गठबंधन और सीट शेयरिंग पर भी काम काफी तेज हो गया है। सत्ताधारी डीएमके और एआईएडीएमके ने अपना फेमवर्क लगभग तय कर लिया है। इस बीच चेन्नई में एक अहम मीटिंग होगी। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल आमने-सामने होंगे। इस मीटिंग में दोनों के बीच सीट शेयरिंग पर बड़ा फैसला हो सकता है।

डीएमके की एक अहम सहयोगी कांग्रेस ने पिछले साल नवंबर में अपने गठबंधन पार्टनर के साथ सीट-शेयरिंग की शर्तों पर बातचीत करने के लिए गिरीश चोडनकर के नेतृत्व में पांच मेंबर की कमेटी बनाई थी लगभग तीन महीने से, पार्टी डीएमके से बातचीत शुरू करने के लिए फॉर्मल तौर पर अपना नेगोशिएशन पैनल बनाने की अपील कर रही थी।

### कांग्रेस की डिमांड ज्यादा

कांग्रेस पिछले चुनाव की तुलना में ज्यादा सीटों की डिमांड कर रही है। 2021 के चुनाव में कांग्रेस ने 25 सीटों पर चुनाव लड़ा था। इनमें से 18 सीटों पर उसने शानदार जीत हासिल की थी। अब कांग्रेस का पैनल सीएम स्टालिन को अपनी नई लिस्ट सौंप सकता है। इस मीटिंग से अलायंस की आगे की पूरी तस्वीर साफ हो जाएगी।

### चेन्नई में होगी मीटिंग

कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल नई दिल्ली से चेन्नई पहुंच रहे हैं। उनके साथ तमिलनाडु कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष के सेल्वापेरुंथगई भी मौजूद रहेंगे। सीनियर कांग्रेस लीडर गिरीश चोडनकर भी इस खास मीटिंग का हिस्सा होंगे। इस मीटिंग का मेन फोकस सेक्युलर प्रोग्रेसिव अलायंस की सीट शेयरिंग पर होगा। राज्य में इस अलायंस को डीएमके ही लीड कर रही है।

### आईयूएमएल की भी भागीदारी

डीएमके की कमिटी ने अपने अलायंस पार्टनर्स से बातचीत शुरू कर दी है। रविवार को इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के साथ पहली मीटिंग हुई। आईयूएमएल लीडर कादर मोहिदीन की लीडरशिप में एक डेलीगेशन डीएमके पैनल से मिला। अब कांग्रेस के साथ इस सीट शेयरिंग को फाइनल रूप दिया जाएगा। सोर्सेज के मुताबिक वेणुगोपाल अब स्टालिन को अपनी प्रायोरिटी वाली सीटों की लिस्ट देंगे। डीएमके ने फॉर्मल बातचीत की डेट 22 फरवरी तय की थी। लेकिन रविवार की मीटिंग से साफ है कि यह बातचीत अब अपने फाइनल फेज में है।

# महाराष्ट्र-यूपी से लेकर तमिलनाडु तक जारी है सयासी लड़ाई

## राज ठाकरे बोले- मुलाकात के पीछे राजनीति तलाशना गलत

» डीएमके नेता कनिमोझी ने बीजेपी को घेरा

» उद्धव की नाराजगी के बाद आई राज ठाकरे की सफाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति में इन दिनों मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की मुलाकात को लेकर घमासान मचा हुआ है। वहीं तमिलनाडु में डीएमके नेता कनिमोझी नें कांग्रेस के गठबंधन को अटूट बताकर भाजपा को अपना घर संभालने की नसीहत दे दी है। उधर महाराष्ट्र के राजनीतिक हलकों में दोनों नेताओं की मुलाकात को लेकर नए-नए मतलब निकालने जाने पर अब खुद मनसे चीफ ने स्थिति को साफ करके चर्चाओं पर विराम लगाने की कोशिश की है।

महाराष्ट्र की राजनीति में उद्धव ठाकरे उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को दुश्मन नंबर एक मानते हैं। शिवसेना के दो फाड़ होने के बाद से वह आज तक एकनाथ शिंदे से नहीं मिले हैं लेकिन बीएमसी चुनावों से पहले साथ आए चचेरे भाई राज ठाकरे की शिंदे से मुलाकात पर राजनीति गरमा गई थी। उद्धव ठाकरे की नाराजगी के बाद अब महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने सफाई दी है। राज ठाकरे ने कहा है कि हर मुलाकात पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। गौरतलब हो कि ठाणे स्थित शिंदे के आवास पर दोनों नेताओं की मुलाकात हुई थी। इसके बाद शिवसेना यूबीटी के सांसद संजय राऊत ने कड़ी आलोचना की थी।

### तो कुछ अनबन है उद्धव-राज के बीच!

राज ठाकरे ने भले ही मुलाकात को लेकर सफाई दे दी है, लेकिन राजनीतिक हलकों में इस सियासी होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि राज ठाकरे चाहते थे कि बीएमसी में मनोनीत होने वाले पार्षदों में मनसे को भी प्रतिनिधित्व मिले, लेकिन उद्धव ठाकरे ने शिवसेना यूबीटी के तीन नामांकित नगरसेवकों की सूची को अंतिम रूप दे दिया। अब देखना है कि मनसे को खुश करने के लिए उद्धव ठाकरे की तरफ से पहल होती है या फिर शिंदे की तरफ से। इसके बाद ही तय होगा कि यह मुलाकात राजनीतिक थी या फिर नहीं। बीएमसी में 10 पार्षद नियुक्त किए जाएंगे।

## इंडिया गठबंधन के साथ आएंगी मायावती?

मायावती भले ही बार-बार प्रदेश में अकेले चुनाव लड़ने की बात कह रही हों लेकिन, यूपी कांग्रेस प्रभारी अविनाश पांडे ने उन्हें विपक्षी दलों के साथ आने का न्योता देकर साफ कर दिया है कि इंडिया गठबंधन के द्वार बसपा के लिए खुले हैं। वहीं बसपा सुप्रीमो मायावती ने 15 जनवरी को अपने जन्मदिन पर पत्रकारों से बात की तो उनका रुख भी थोड़ा नरम दिखाई दिया।

### मायावती के संकेत से सियासी हलचल तेज

मायावती ने भले ही इंडिया गठबंधन को लेकर अपनी रणनीति साफ नहीं की लेकिन, ईवीएम और एसआईआर का जिक्र कर परोक्ष रूप से कांग्रेस की नीतियों के प्रति परोक्ष रूप से अपना समर्थन जाहिर किया। यही नहीं उन्होंने ये भी कहा कि अगर कोई दल सवर्ण वोट उनके पक्ष में ट्रांसफर कर सकता है तो वो भविष्य में गठबंधन कर सकती हैं। दरअसल मायावती अक्सर ये आरोप लगाती रही है कि गठबंधन में बसपा को वोट तो दूसरे दल को मिल जाता है लेकिन उनकी पार्टी को समर्थन नहीं मिलता। बसपा सुप्रीमो का इशारा कांग्रेस से जोड़कर देखा जा रहा है क्योंकि, बीजेपी से नाराज सवर्ण वर्ग को कांग्रेस से दिक्कत नहीं है और मुस्लिम व दलित वोटर भी कांग्रेस से सहज है। ऐसे में अगर कांग्रेस पार्टी अगर मायावती को भरोसे में ले सकता है तो आगामी चुनाव में यूपी की राजनीति में नया सियासी समीकरण देखने को मिल सकता है। वहीं दूसरी तरफ अखिलेश यादव की मायावती के प्रति नरमी भी काफी कुछ संकेत दे रही है।

## शहरों की बिगड़ती स्थिति को लेकर शिंदे से मिले थे मनसे प्रमुख

डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे से मुलाकात को लेकर मचे सियासी बवाल के बाद खुद राज ठाकरे ने सफाई दी है। उन्होंने कहा है कि हर मुलाकात के पीछे राजनीति तलाशना गलत है। राज ठाकरे ने बातचीत के दौरान उप मुख्यमंत्री शिंदे से मुलाकात का कारण बताया। उन्होंने कहा कि वह शहरों की बिगड़ती स्थिति को लेकर शिंदे से मिले थे। राज ठाकरे ने कहा कि आज शहरों में ट्रैफिक जाम, पार्किंग की समस्या और अवैध विकास ने भयावह स्थिति पैदा कर दी है। हम सड़कें और पलाईओवर बनाने को विकास समझते हैं, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। राज ठाकरे ने कहा कि जहां पहले 25-40 लोग रहते थे, वहां आज 400 लोग रह रहे हैं, लेकिन जगह और सड़कें वही हैं।

## बसपा यूपी में बिगाड़ेंगी भाजपा के खेल

यूपी चुनाव को लेकर सियासी हलचल तेज हो गई हैं। ऐसे में सबकी नजरें बसपा सुप्रीमो मायावती की आगे की रणनीति पर टिकी है। कांग्रेस पहले ही उन्हें साथ आने का न्योता दे चुकी हैं। उत्तर प्रदेश में अगले साल 2027 में होने वाले विधानसभा को लेकर सियासी बिसात बिछना शुरू हो गई है। बहुजन समाज पार्टी ने भी साफ कर दिया है कि वो ये चुनाव अकेले ही लड़ेगी लेकिन, उन्होंने एक ऐसा संकेत भी दिया है जिससे इंडिया गठबंधन की उम्मीदें बढ़ गई है। कयास है कि अगर बसपा की एक शर्त पूरी होती है तो वो विपक्षी दलों के साथ आ सकती हैं। यूपी चुनाव से पहले मायावती पर सबकी नजरें टिकी हुई हैं। कांग्रेस पार्टी पहले ही बसपा को इंडिया गठबंधन में शामिल होने का खुला न्योता दे चुकी हैं तो वहीं समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव का रुख भी नरम बना हुआ हैं। जिससे संकेत मिल रहे हैं कि भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ विरोधी दल मायावती के साथ मिलकर सामाजिक और जातीय गोलबंदी करना चाहते हैं।

# ईपीएस तमिलनाडु के अगले मुख्यमंत्री बनेंगे : नागेंद्रन

विपक्ष के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में नागेंद्रन ने कहा कि एडप्पाडी के. पलानीस्वामी (ईपीएस) तमिलनाडु के अगले मुख्यमंत्री बनेंगे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि डीएमके के कई मंत्री, जिनमें मंत्री नेहरू भी शामिल हैं, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मुकदमों का सामना कर रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ओ. पन्नीरसेल्वम के बारे में नागेंद्रन ने कहा कि भाजपा उनका बहुत सम्मान करती है और यह उन्हीं पर निर्भर है कि वे किस राजनीतिक गठबंधन को अपना लाभप्रद मानते हैं। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा पन्नीरसेल्वम से मुलाकात से इनकार करने की खबरों के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने इसे पुराना मुद्दा बताया। नागेंद्रन ने आगे कहा कि केंद्र सरकार तमिलनाडु को शिक्षा सहित सभी आवश्यक धनराशि आवंटित कर रही है।

### तमिलनाडु में भाजपा अपने गठबंधन को लेकर उत्साहित

तमिलनाडु में डीएमके सरकार के लोक लुभावन योजनाओं से भाजपा परेशान हो गई है। बीजेपी प्रमुख नैनार नागेंद्रन ने आगामी विधानसभा चुनावों पर विश्वास जताते हुए कहा कि 200 सीटों का फैसला जनता करेगी। उन्होंने डीएमके सरकार पर 90 प्रतिशत चुनावी वादे पूरे न करने और राज्य में कानून-व्यवस्था बिगाड़ने का गंभीर आरोप लगाया। नागेंद्रन ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की दूसरी चुनावी सभा शहर में आयोजित होने वाली है। गठबंधन पर अपना विश्वास दोहराते हुए नागेंद्रन ने कहा कि जनता तय करेगी कि 200 सीटें कौन जीतेगा। नागेंद्रन ने सत्ताधारी द्रविड़ मुन्नेत्र कजगम (डीएमके) सरकार पर अपने अधिकांश चुनावी वादों को पूरा करने में विफल रहने का आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि डीएमके द्वारा किए गए 90 प्रतिशत वादे पूरे नहीं किए गए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि आदि द्रविड़ कल्याण विभाग के लिए निर्धारित धनराशि को राज्य सरकार द्वारा अन्य विभागों में स्थानांतरित किया जा रहा है। जनता को झूठे आश्वासन दिए गए। भाजपा नेता ने आगे दावा किया कि राज्य में कानून व्यवस्था बिगड़ गई है, और गांजा तस्करी, हत्याओं और लूटपाट की बढ़ती घटनाओं का हवाला दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार सुरक्षित शासन सुनिश्चित करने में विफल रही है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

## जिद... सच की

# धार्मिक जगहों पर वीआईपी सुविधा निंदनीय

*मंदिरों में वीआईपी दर्शन सुविधा को रोकना चाहिए। यह मामला देश भर के मंदिरों में आम लोगों और वीआईपी के बीच भेदभाव के मुद्दे को उठाता है। वीआईपी दर्शन की सुविधा से आम लोगों को लंबी कतारों में इंतजार करना पड़ता है, जबकि वीआईपी आसानी से दर्शन कर लेते हैं। केंद्र की सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने मंदिरों में वीआईपी दर्शन सुविधा को चुनौती देने वाली याचिका भले ही खारिज कर दी, किंतु इस याचिका पर कोर्ट द्वारा कही गई बातों की गूंज दूर तक जाएगी। यह गूंज केंद्र सरकार को विवश करेगी कि वह मंदिरों में होने वाले वीवीआईपी दर्शन पर रोक लगाने वाला निर्णय लें। कोर्ट की ये गूंज आने वाले समय में मंदिरों के वीवीआईपी दर्शन कर रोक लगाने का रास्ता प्रशस्त करेगी। पूर्व मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि यह एक नीतिगत मामला है। इस पर केंद्र सरकार को विचार करना होगा। बेंच ने यह भी कहा कि वीआईपी के लिए ऐसा विशेष व्यवहार मनमाना है।*

*यह याचिका मंदिरों की तरफ से वसूले जाने वाले वीआईपी दर्शन शुल्क को समाप्त करने की मांग कर रही थी। पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि बेंच इस मुद्दे से सहमत है, लेकिन अनुच्छेद 32 के तहत निर्देश जारी नहीं कर सकती। उन्होंने कहा, हालांकि हमारी राय है कि मंदिरों में प्रवेश के संबंध में कोई विशेष व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन हमें नहीं लगता कि यह अनुच्छेद 32 के तहत अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने का उपयुक्त मामला है। यह आदेश में दर्ज किया गया लेकिन मामला सरकार के विचार के लिए छोड़ दिया गया। पूर्व सीजेआई खन्ना ने कहा कि यह मामला कानून-व्यवस्था का प्रतीत होता है और याचिका इस पहलू पर होनी चाहिए थी। बेंच ने कहा, हम स्पष्ट करते हैं कि याचिका खारिज होने से संबंधित अधिकारियों को जरूरत के हिसाब से कार्रवाई करने से नहीं रोका जाएगा। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा, आज 12 ज्योतिर्लिंग और शक्तिपीठ इस प्रैक्टिस को फॉलो करते हैं। ये मनमाना और भेदभाव वाला है। यहां तक कि गृह मंत्रालय ने भी आंध्र प्रदेश से इसकी समीक्षा करने को कहा है। चूंकि, भारत में 60 प्रतिशत पर्यटन धार्मिक है, इसलिए ये भगदड़ की प्रमुख वजह भी है। सुप्रीम कोर्ट में ये याचिका विजय किशोर गोस्वामी ने डाली थी। उन्होंने मंदिरों में अतिरिक्त शुल्क लेकर वीआईपी दर्शन के चलन को आर्टिकल 14 के तहत समानता के अधिकार और आर्टिकल 21 के तहत व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन बताया। उन्होंने दलील दी कि जो लोग इस तरह का शुल्क अदा करने में असमर्थ हैं, ये उनके खिलाफ भेदभाव है। याचिका में जोर देकर कहा गया था कि कई मंदिर 400 से 500 रुपये में लोगों के लिए विशेष दर्शन की व्यवस्था करते हैं। इससे आम श्रद्धालु और खासकर महिलाएं, स्पेशली एबल्ड लोग और सीनियर सिटिजंस को दर्शन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।*

**“ वीआईपी दर्शन की सुविधा से आम लोगों को लंबी कतारों में इंतजार करना पड़ता है, जबकि वीआईपी आसानी से दर्शन कर लेते हैं। केंद्र की सरकार को इस ध्यान देना चाहिए। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने मंदिरों में वीआईपी दर्शन सुविधा को चुनौती देने वाली याचिका भले ही खारिज कर दी, किंतु इस याचिका पर कोर्ट द्वारा कही गई बातों की गूंज दूर तक जाएगी।**

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

# एआई में नवाचार के साथ मौलिकता की शर्त

डॉ. संजय वर्मा

आज हम विकसित दुनिया का जो चेहरा देख पा रहे हैं, उसमें विज्ञान और तकनीकी उन्नति की बड़ी भूमिका है। यही वजह है कि जैसे ही किसी नई तकनीक का आविष्कार होता है, दुनिया में उसे समझने और अपनाने की होड़ पैदा हो जाती है। हाल के अरसे में इंटरनेट के बाद जिस तकनीकी आविष्कार की सबसे ज्यादा चर्चा रही है, वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) है। सवा तीन साल पहले नई भूमिका में अवतरित हुई इस तकनीक के कमाल इतने लुभावने हैं कि लगभग हर महीने दुनिया के किसी न किसी कोने से इससे जुड़े किसी नए करिश्मे की खबर आ जाती है। यही वजह कि इस तकनीक में दुनिया के अग्रणी देशों के साथ कदमताल करने की मंशा से भारत सरकार ने वैश्विक स्तर का पांच दिवसीय एक आयोजन 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' नाम से किया और 140 देशों को इसमें आमंत्रित किया।

देश में यह पहल निश्चय ही सराहनीय है, लेकिन तकनीकी नवाचार (इनोवेशन) की कुछ अलिखित शर्तें हैं, जिनमें मौलिकता पहली है। मौलिक और रचनात्मक विचारों-आविष्कारों के बल पर कुछ देश और संगठन तकनीकी श्रेष्ठता और वैश्विक मान्यता अर्जित करते हैं और सफलता की नई मीनारें खड़ी करते हैं। अभिप्राय यह कि तकनीकी नवाचार में नकल या कॉपी-पेस्ट जैसी चीजें नहीं चलतीं। इसमें कुछ अलग हटकर कर दिखाना ही सफलता की प्रमुख अनिवार्यता है। इस दृष्टिकोण से 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' में घटित कुछ घटनाओं को देखें, तो लगता है कि एक तकनीक के रूप में एआई की जो बड़ी खामी है, वह इसके परिदृश्य में शामिल हो रहे कुछ लोगों-संगठनों को भी अपनी पकड़ में ले चुकी है और उनका व्यवहार इसी के अनुरूप है। एआई पर तोहमत यह है कि यह अपनी ओर से कुछ नया नहीं रचती या रचनात्मक नहीं जोड़ती है। कुछ आंकड़ों, तथ्यों और पैटर्न को समझकर एक सुनिश्चित ढांचे में चीजों को पेश कर देना ही इसकी भाषा में नवाचार है, जो असल में नहीं है।

चीजों को तेजी से संजोकर नए पैटर्न में कोई सामग्री पेश कर देना तो इसे (एआई टूल्स को) आता है, लेकिन यह औसत इंसानी समझ के दायरे से बाहर नहीं जा पाती। जबकि नवाचार इससे काफी अलहदा होता है। यही वजह कि एआई समिट के तीसरे दिन दिल्ली-एनसीआर के एक निजी विश्वविद्यालय की ओर से महासम्मेलन में दिखाए जा रहे एआई रोबोट और सॉकर ड्रोन को लेकर किए जा रहे दावों की सच्चाई

सामने आ गई कि इन्हें चीन और कोरियाई कंपनियों से खरीदा गया है, न कि विश्वविद्यालय के तंत्र और छात्रों ने बनाया है। हालांकि विश्वविद्यालय ने सफाई दी कि उनके कैंपस में इन्हें डिवेलप किया जा रहा था, न कि इन्हें बनाया (बिल्ड किया) गया था। अगर ऐसा भी है, तो यह किसी का चित्र या वीडियो देखकर उसकी नकल (डीपफेक) तैयार करने के समकक्ष बैठता है और हमें एआई को लेकर देश में हो रही पहलकदमियों को लेकर ज्यादा गंभीरता से विचार करने को प्रेरित करता है। यहां एआई को लेकर भारत में हो रहे कथित नवाचार को लेकर सवाल पैदा होते हैं। जैसे, पहला सवाल यह कि क्या हमें वास्तव में इसकी जरूरत है? एक ऐसी तकनीक, जिस पर आरोप हैं कि वह सैकड़ों क्षेत्रों में दखल देते हुए लाखों रोजगार खा जाएगी, आबादी बहुल देश में तभी कोई अर्थ रखती है, जब उससे नई किस्म के दूसरे लाखों रोजगार पैदा हों। अभी इसका सटीक उत्तर मिलने में वक्त है, क्योंकि चैटजीपीटी के नए अवतार में सामने आए अभी इसे महज सवा तीन साल बीते हैं। दूसरा सवाल है कि क्या भारत को इसे आजमाने की तेजी दिखानी चाहिए? तकनीकें अपनाने व उन्हें समझने को लेकर दुनिया का जो मौजूदा ट्रेंड है, उसके मद्देनजर इस प्रश्न का उत्तर हां है। लेकिन तीसरा अहम सवाल यह है कि आखिर भारत के लोग, सरकार और तमाम संगठन क्या इसमें कोई नवाचार कर पा रहे हैं? इस सवाल का उत्तर दो टुकड़ों में मिलता है। पहला, यदि नवाचार का तंत्र विकसित करने और माहौल बनाने की बात है, तो सरकार और शिक्षण संस्थानों से लेकर तमाम कंपनियां इसमें पूरी ताकत से लग गए हैं- जो सार्थक बात है। लेकिन उत्तर का दूसरा हिस्सा हमें दुविधा में डालता है। यहां यह तथ्य सामने आता है कि तकनीकी नवाचार से जुड़े ज्यादातर मामलों में हमारा देश कॉपी-पेस्ट शैली वाले नवाचार में फंस गया है।

हमारे ही आसपास तमाम लोग और कंपनियां गूगल जैसा सर्च इंजन, फेसबुक, इंस्टाग्राम या व्हाट्सऐप जैसा सोशल मीडिया मंच या फिर उन्हीं आविष्कारों को दोहराने का प्रयास करते दिखाई देते हैं, जिनका ईजाद अमेरिका, चीन, जापान, कोरिया में हुआ और हम उनकी नकल तैयार करने लगते हैं। सवाल है कि क्या यह नवाचार है। तो इसका उत्तर है कि यह हमें लकीर का फकीर साबित करता है। हम लीक से हटकर कोई ऐसा नया आविष्कार नहीं कर रहे , जो दुनिया को झकझोर दे और दूसरे देशों को वह भारतीय आविष्कार अपनाने-खरीदने को प्रेरित कर दे।

# न्याय की भाषा और भाषा का न्याय

डॉ. सुधीर कुमार

किसी भी जीवंत लोकतंत्र की सफलता नागरिकों और संस्थाओं के बीच अटूट संवाद पर टिकी है, लेकिन भारतीय अदालतों में यह डोर अक्सर भाषाई बाधाओं के कारण टूट जाती है। कल्पना कीजिए उस मुवक्किल की, जिसके जीवन का फैसला उसकी अपनी भाषा में नहीं हो रहा। हाल ही में न्याय की देवी की आंखों से प्रतीकात्मक पट्टी तो हटा दी गई ताकि यह संदेश जाए कि न्याय सबको देखता है, लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं हुआ। आज भी जब अदालत की कार्यवाही मुवक्किल के लिए 'विदेशी' भाषा में होती है तो लगता है कि आंखों की पट्टी अब 'भाषाई पट्टी' में बदल गई है। निष्पक्षता का नया प्रतीक आज भी आम नागरिक 'बौद्धिक रूप से बहिष्कृत' करने वाले औपनिवेशिक भाषाई औजार के सामने बेबस है।

इस विडंबना का सबसे मार्मिक दृश्य तब उभरता है जब जीवन भर की कानूनी लड़ाई लड़ने वाला व्यक्ति फैसले के बाद अपने ही वकील से पूछता है-'साहब, मैं जीता या हारा?' यह सवाल उस व्यवस्था पर मूक प्रहार है जहां न्याय तो होता है, पर वह पीड़ित की समझ से कोसों दूर रहता है। लोकतंत्र की असली परिपक्वता तभी सिद्ध होगी जब न्याय की भाषा और पीड़ित की भाषा का यह फासला खत्म होगा और कानून वास्तव में 'जनता की भाषा' में संवाद करेगा। भारत में उच्च न्यायपालिका की भाषा मुख्य रूप से अंग्रेजी है, जो लॉर्ड मैकाले की उसी शिक्षा नीति की विरासत है, जिसका लक्ष्य भारतीयों को उनकी जड़ों से काटना था। आज 'आजादी के अमृत काल' में भी अनुच्छेद 348(1)(क) के कारण सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट की कार्यवाही अंग्रेजी में ही होती है। यह विडंबना है कि जिस देश की 90 प्रतिशत आबादी अंग्रेजी नहीं जानती, वहां के सबसे बड़े अदालती फैसले उसी भाषा में दिए जाते हैं। अदालतों में मुवक्किल की स्थिति उस मूकदर्शक जैसी होती है जो अपनी ही कहानी को किसी और की जुबानी, एक अनजान भाषा में सुन रहा है। वह वकील की दलीलों पर केवल गर्दन हिलाता है, उन्हें समझता नहीं।

'भाषा का न्याय' तब खंडित होता है जब एक ग्रामीण किसान को यह समझने के लिए अनुवादक की आवश्यकता पड़ती है कि फैसला उसके हक में है या खिलाफ। यह अनुच्छेद 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) का सूक्ष्म उल्लंघन है, क्योंकि 'न्याय तक पहुंच' में उसे 'समझना' भी शामिल है। न्याय की भाषा केवल अंग्रेजी होने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह पुराने लैटिन शब्दों के भारी बोझ से भी दबी हुई है। उत्प्रेषण, पूर्व न्याय और दूसरे पक्ष को भी सुनो जैसी कानूनी शब्दावलियां एक आम नागरिक के लिए किसी अबूझ पहेली या जादू-टोने के मंत्र जैसी प्रतीत होती हैं। समय-समय पर न्यायपालिका में इस पर बहस हुई है। 'मधु लिमये बनाम वेदानंद शर्मा (1970)' के मामले में जब मधु लिमये ने हिंदी में बहस की अनुमति मांगी, तो उसे खारिज कर दिया गया। इसके विपरीत, यदि हम वैश्विक परिदृश्य देखें, तो फ्रांस में फ्रांसीसी, जर्मनी में जर्मन, जापान में जापानी और चीन में मंदारिन का प्रयोग होता है।

वहां कानून को 'आम आदमी की समझ' से बाहर की चीज नहीं माना जाता। भारत में तर्क दिया जाता है कि अंग्रेजी हमें वैश्विक व्यवस्था से जोड़ती है, लेकिन क्या यह तर्क उस गरीब की संतुष्टि से बड़ा है जिसे अपनी हार या जीत का कारण ही समझ नहीं आता? डिजिटल युग में 'सुवास' (सुप्रीम कोर्ट विधिक अनुवाद सॉफ्टवेयर) जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल का विकास भाषाई दीवार को गिराने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है, जो अदालती फैसलों को क्षेत्रीय भाषाओं में सुलभ बना रहा है। हालांकि, अनुवाद कभी भी अभिव्यक्ति का पूर्ण विकल्प नहीं हो सकता क्योंकि इसमें अक्सर कानूनी बारीकियां और संवेदनाएं खो जाती हैं। वास्तविक न्याय तब होगा जब हम 'अनुवादित न्याय' से आगे बढ़कर 'मौलिक भाषाई न्याय' की ओर बढ़ेंगे, जहां फैसले अनुवाद के भरोसे न रहकर सीधे पीड़ित की मातृभाषा में लिखे जाएं। आज भारत में भी एक सशक्त 'सरल भाषा आंदोलन' की नितांत आवश्यकता है, ताकि कानून की पेचीदगियों को 10वीं कक्षा का एक सामान्य छात्र भी आसानी से समझ सके। इस दिशा में कुछ ठोस और व्यावहारिक कदम उठाने होंगे, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेद 348(2) का विस्तार करना है ताकि उच्च न्यायालयों में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को वास्तविक बढ़ावा मिल सके।

आधुनिक दौर में तकनीक का लाभ उठाते हुए एक 'द्विभाषी व्यवस्था' विकसित की जानी चाहिए, जहां अदालती कार्यवाही की लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान स्थानीय भाषाओं में सबटाइटल उपलब्ध हों। इसके साथ ही, विधि शिक्षा के पाठ्यक्रम में सुधार करना अनिवार्य है ताकि भविष्य के वकील अपनी मिट्टी की बोली और संवेदनाओं से जुड़े रहें। प्रत्येक न्यायिक फैसले के अंत में एक 'सरल सारांश' जोड़ने की परंपरा शुरू होनी चाहिए, जो भारी-भरकम कानूनी शब्दावलियों से मुक्त हो और आम नागरिक को यह स्पष्ट कर सके कि वास्तव में फैसला क्या हुआ है। न्याय केवल एक आदेश पत्र नहीं है, बल्कि पीड़ित के मन में उपजी वह संतुष्टि है जो उसे यह विश्वास दिलाती है कि उसकी बात सुनी गई। जिस दिन एक आम भारतीय अपनी अदालत के फैसले को स्वयं पढ़कर गौरव महसूस करेगा, उसी दिन हम भारत के लोग का संवैधानिक वादा पूरा होगा।

# 40 पार के बाद अपनाएं ये आदतें

## आसपास भी नहीं भटकेंगी बीमारी

जीवन में 40 की उम्र क्रॉस करना हमारे स्वास्थ्य के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण मोड़ होता है। इस उम्र के बाद शरीर का मेटाबॉलिज्म धीमा होने लगता है, मांसपेशियों का नुकसान शुरू होता है, और पुरानी बीमारियों के उभरने का जोखिम भी तेजी से बढ़ जाता है। इसलिए अगर आप लंबी, स्वस्थ और सक्रिय उम्र व्यतीत करना चाहते हैं, तो केवल अच्छी सेहत की कामना करने से काम नहीं चलेगा। 40 की उम्र पार कर चुके लोगों को अपने दैनिक दिनचर्या में कुछ वैज्ञानिक और अनुशासनिक आदतें शामिल करना अनिवार्य है। ये आदतें न केवल आपको बीमारियों से बचाएंगी, बल्कि आपकी एनर्जी लेवल को बनाए रखने और बुढ़ापे की प्रक्रिया को धीमा करने में भी मदद करेंगी। लंबी उम्र का रहस्य किसी महंगी दवा या सप्लीमेंट में नहीं, बल्कि आपकी नींद की क्वालिटी, शारीरिक सक्रियता और आपके आहार की पसंद में छिपा है।

### खाएं ताजे फल और सब्जियां

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स में मौजूद अत्यधिक चीनी, नमक और अनहेल्दी फैट शरीर में सूजन पैदा करती है, जो बुढ़ापे और बीमारियों का मूल कारण है। 40 की उम्र के बाद इन फूड्स को डाइट से हटाकर, ताजे फल, सब्जियां और साबुत अनाज पर दिनचर्या में शामिल करें। सबसे पहले फलों या सब्जियों को टैप या नल के नीचे रखकर बहते हुए पानी से धोएं। अब एक बर्तन में फल और सब्जियों को रख लें। और उसमें 3 कप फिल्टर पानी और 1

### 7-9 घंटे नींद जरूरी

हेल्थ एक्सपर्ट्स के अनुसार 40 की उम्र के बाद, 7 से 9 घंटे की क्वालिटी नींद लेना आपके अच्छे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। नींद के दौरान ही शरीर हार्मोन का संतुलन बनाता है, क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत करता है और मस्तिष्क खुद को डिटॉक्स करता है। कम नींद कोर्टिसोल को बढ़ाती है, जिससे वजन बढ़ता है और हृदय रोग का जोखिम भी बढ़ने लगता है। हर 7-9 घंटे की नींद लेना बहुत जरूरी है। वैज्ञानिकों ने रिसर्च की। सामने आया कि जरूरत से ज्यादा या कम नींद लेना, दोनों ही सेहत के लिए ठीक नहीं है। पर्याप्त नींद न लेने का सीधा असर इंसान की याद्दाश्त और सोचने-समझने की क्षमता पर पड़ता है।

### व्यायाम करें

एक ही जगह पर बैठे रहना किसी भी उम्र के लोगों के सेहत के लिए बहुत खतरनाक हो सकता है। खासकर 40 की उम्र के बाद, हमारी मांसपेशियां तेजी से कमजोर होने लगती हैं। इस नुकसान को रोकने के लिए, रोजाना 30 मिनट का हल्का व्यायाम जरूर करें। यह साधारण कसरत मांसपेशियों को मजबूत बनाए रखती है, शरीर का मेटाबॉलिज्म तेज करती है, और आपके हृदय को पूरी तरह स्वस्थ रखने मदद करती है। मसल्स बनाने या शारीरिक फायदों के लिए सिर्फ एक व्यायाम काफी नहीं है, बल्कि अलग-अलग तरह की एक्सरसाइज को रूटीन में शामिल करना चाहिए। एक्सरसाइज सिर्फ वजन बढ़ाने या पतले होने के लिए नहीं, बल्कि ओवरओल हेल्थ को बेहतर रखने के लिए किया जाता है। इसलिए फिटनेस के अलग-अलग पहलुओं जैसे ताकत, सहनशक्ति, लचीलापन और स्थिरता पर काम करना जरूरी है।

### चेकअप कराएं

40 की उम्र के बाद अधिकांश पुरानी बीमारियां दबे पांव शुरू होने लगती हैं। इसलिए बीमार पड़ने का इंतजार न करें। अपनी उम्र के हिसाब से जरूरी नियमित स्वास्थ्य जांच जरूर कराएं। हाई बीपी, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर की जांच कराते रहें। समय पर निदान होने पर, किसी भी बीमारी को शुरुआती चरण में ही नियंत्रित किया जा सकता है। क्योंकि 40 वर्ष की आयु पार करने पर चयापचय प्रक्रिया में अकुशलता में बदलाव आना शुरू हो सकता है और शरीर के अन्य अंग (जैसे यकृत, गुर्दे और हृदय) एक निश्चित स्तर पर क्षीण होने लग सकते हैं।

## हंसना मना है

डॉक्टर के पास पहुंचा गप्पू, डॉक्टर ने गप्पू की टेस्ट रिपोर्ट देख कहा- आपकी एक किडनी फेल हो गई है, गप्पू रोने लगा, और कुछ देर बाद आंसू पोंछते हुए बोला-ये तो बता दीजिए डॉक्टर साहब कि मेरी किडनी आखिर कितने नंबर से फेल हुई है?

डाकू (संता से) - हम घर लूटने आए हैं, लेकिन बंदूक घर पर ही भूल गए हैं, संता- कोई बात नहीं, आप लोग शरीफ आदमी लगते हो, आज घर लूट लो कल आकर बंदूक जरूर दिखा जाना।

लड़की वाले बेटी के लिए लड़का देखने गए। लड़की वाले- कितना कमा लेते हो? लड़का- इस महीने दो करोड़ कमाया। लड़की वाले- फिर क्या हुआ? लड़का- बस, फिर मोबाइल में तीन पत्ती हैंग हो गया और सारी कमाई चली गई।

पत्नी पति से- उठो सुबह हो गई, पति- आंख नहीं खुल रही है, ऐसा कुछ बोलो कि नीद गायब हो जाए। पत्नी- रात में जिस जानू से चैट कर रहे थे, वो मेरी दूसरी ID है। अब बेचारे पति को 3 दिन से नीद नहीं आ रही है।

## कहानी

### बिल्ली के गले में घंटी

एक बहुत बड़े घर में सैकड़ों चूहे रहते थे। वो अपना पेट भरने के लिए पूरे घर में टहलते थे। सभी चूहे हंसी-खुशी अपना पेट भर लिया करते थे। उनकी जिंदगी बड़े आराम से कट रही थी। अचानक एक दिन उस घर में शिकार करने के लिए, कहीं से एक बिल्ली आ गई। बिल्ली को देखते ही सारे चूहे तेजी से अपने-अपने बिल में छिप गए। उसने देखा कि उस घर में तो बहुत सारे चूहे हैं। उसने यहीं रहने का मन बना लिया। अब बिल्ली उसी घर में रहने लगी। जब भी उसे भूख लगती, तो बिल्ली अंधेरे में जाकर छिप जाती थी। जब चूहे बाहर निकलते, तो बिल्ली उन पर झपटा मारकर खा जाती थी। ऐसा रोज होने लगा। धीरे-धीरे चूहों की संख्या कम होने लगी थी। अब चूहों में दहशत फैल गई थी। इस समस्या का हल निकालने के लिए चूहों ने एक सभा बुलाई। सभा में सभी चूहे मौजूद थे। सभी ने कई सुझाव दिए, ताकि बिल्ली के आतंक को रोका जा सके और उसका शिकार बनने से चूहे बचे रहें। किसी का सुझाव ऐसा नहीं था, जिससे बिल्ली का आतंक रोका जा सके। सभी चूहे बैठे ही थे कि अचानक से एक बूढ़े चूहे ने सुझाव दिया। उसने कहा कि हम बिल्ली से बच सकते हैं, लेकिन उसके लिए एक घंटी और धागे की जरूरत पड़ेगी। बूढ़े चूहे ने कहा कि हम बिल्ली के गले में घंटी बांध देंगे और जब वह आएगी, तो घंटी बजने से हमें खतरे के बारे में पता चल जाएगा। खतरा जानने के बाद हम लोग भाग कर अपनी बिल में छिप जाएंगे। इससे हम लोग बिल्ली का शिकार बनने से बचे रह सकते हैं। सभी चूहे खुशी से झूमने लगे। सबने नाचना शुरू कर दिया और खुश होने लगे कि अब तो वह बिल्ली के खतरे से बचे रहेंगे। सभी चूहे खुशियां मना ही रहे थे कि अचानक से एक अनुभवी चूहा उठ खड़ा हुआ। उसने सभी चूहों को जोर से डांट लगाई और कहा कि चुप रहो, तुम सब मूर्ख हो। उसके बाद अनुभवी चूहे ने जो कहा, वह सुनकर सभी का मुंह उतर गया। चूहे ने कहा कि वो सब तो ठीक है, लेकिन जब तक बिल्ली के गले में घंटी नहीं बंध जाती, तब तक हम सुरक्षित नहीं हैं। अब तुम सब पहले ये बताओ कि आखिर बिल्ली के गले में घंटी बांधेगा कौन? सभी चूहे एक दूसरे की तरफ देखने लगे। सभा में सन्नाटा छा गया था। सभी चूहे निराश हो गए। इसी बीच बिल्ले के आने की आहट पाते ही सभी चूहे भागकर अपने-अपने बिल में जाकर छिप गए।

## 7 अंतर खोजें

## जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

**मेष**

प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। कोर्ट व कचहरी में अनुकूलता रहेगी। धनार्जन होगा। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। प्रमाद न करें। भाइयों की मदद मिलेगी।

**वृषभ**

संपत्ति के कार्य लाभ देंगे। बेरोजगारी दूर होगी। धन की आवक बनी रहेगी। जोखिम व जमानत के कार्य न करें। लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रयत्न करें, सफलता मिलेगी।

**मिथुन**

रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। किसी आनंदोत्सव में भाग लेने का मौका मिलेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। पूंजी निवेश बढ़ेगा। प्रचार-प्रसार से दूर रहें।

**कर्क**

क्रोध पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। दुःखद समाचार मिल सकता है। चिंता बनी रहेगी। व्यापार-व्यवसाय में सावधानी रखें। वास्तविकता को महत्व दें।

**सिंह**

मेहनत का फल मिलेगा। कार्यसिद्धि से प्रसन्नता रहेगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शत्रु शांत रहेंगे। धनार्जन होगा। आज विशेष लाभ होने की संभावना है। संपत्ति के लेनदेन में सावधानी रखें।

**कन्या**

मेहमानों का आवागमन होगा। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। प्रसन्नता रहेगी। मान बढ़ेगा। जल्दबाजी न करें। जोखिम के कार्यों से दूर रहें। पराक्रम में वृद्धि होगी।

**तुला**

यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल लाभ देंगे। भेंट आदि की प्राप्ति होगी। कोई बड़ा कार्य होने से प्रसन्नता रहेगी। व्यापार में उन्नति के योग हैं। सगे-संबंधी मिलेंगे।

**वृश्चिक**

वाणी पर नियंत्रण रखें। अप्रत्याशित बड़े खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है, जोखिम न लें। अजनबी व्यक्ति पर विश्वास न करें।

**धनु**

नई योजना बनेगी। नए अनुबंध होंगे। लाभ के अवसर बढ़ेंगे। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है। परिवार की समस्याओं की चिंता रहेगी।

**मकर**

नए अनुबंधों का लाभ मिलेगा। धन प्राप्ति सुगम होगी। पूछ-परख रहेगी। रुके कार्य बनेंगे। जोखिम न लें। वाणी पर नियंत्रण रखना होगा। खानपान पर नियंत्रण रखें।

**कुम्भ**

कोर्ट व कचहरी के काम निबटेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि रहेगी। धनार्जन होगा। प्रमाद न करें। संतान के कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

**मीन**

वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। दूसरों की जमानत न लें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। पारिवारिक जीवन में तनाव हो सकता है।

बॉलीवुड | मन की बात

# सूबेदार में जो अनिल ने किया वह कमाल से भी बढ़कर : अनुपम

अनिल कपूर अपनी आगामी फिल्म सूबेदार को लेकर सुर्खियों में हैं। बीते दिनों रिलीज हुए इसके टीजर को अच्छा रेस्पॉन्स मिला था। अब दर्शक फिल्म के ट्रेलर का इंतजार कर रहे हैं। आधिकारिक रूप से ट्रेलर अभी रिलीज नहीं हुआ है। मगर, अनिल कपूर ने अपने जिगरी दोस्त और एक्टर अनुपम खेर को ट्रेलर हाल ही में दिखाया। इसे देख अनुपम खेर ने सोशल मीडिया पर रिएक्शन शेयर किया है। उन्होंने अनिल कपूर के अभिनय की जमकर तारीफ की है। मगर, बाद में वे माफी मांगते दिखे हैं। 69 वर्षीय अनिल कपूर का काम देख अनुपम खेर हैरान रह गए हैं। उन्होंने लिखा है, मेरे प्यारे अनिल। आपने मुझे अपनी फिल्म सूबेदार का ट्रेलर दिखाया, जो अभी आधिकारिक तौर पर रिलीज भी नहीं हुआ है। इसे देख मैं इतना चौंक गया हूं कि, मुझे तुरंत अपना रिएक्शन कैमरे पर दिखाना पड़ा। आपने एक बार फिर जो किया है, वह कमाल से भी बढ़कर है। अनुपम खेर ने आगे लिखा है, हर फिल्म के साथ आपको खुद को नए तरीके से पेश करते देखना बहुत इंस्पायरिंग लगता है। जब हमें लगता है कि हमने अनिल कपूर का बेस्ट देख लिया है, तो आप एक नए शेड, एक नई रिदम, अपनी आंखों में एक नई आग के साथ आते हैं। ट्रेलर शानदार है। पावरफुल। एक्टर ने आगे लिखा है, कपूर साब, मैं आपकी सबसे ज्यादा तारीफ इसलिए करता हूं, क्योंकि आप कभी सेटल नहीं होते। आप अपनी लेगेसी पर निर्भर नहीं रहते। आप इसे बार-बार बनाते हैं। नए तरीके से पेश आना आपके लिए कोई स्ट्रेटेजी नहीं है, यह आपका नेचर बन गया है। एक साथी एक्टर और एक ऐसे इंसान के तौर पर जो आपको कैमरे के अलावा जानता है, मुझे आप पर गर्व है। आपके सफर पर गर्व है। आपकी हिम्मत पर गर्व है। तो यह उस जुनून के लिए है, जो पुराना होने से मना करता है। एक जबर्दस्त ट्रेलर के लिए पूरी कास्ट और क्रू को बधाई! प्यार और तारीफ के साथ।

# मुझे बॉलीवुड छोड़ने के लिए किया गया पुश : प्रियंका

एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा दुनियाभर में मशहूर हैं। उन्होंने बॉलीवुड और हॉलीवुड दोनों में काम किया है और अपने करियर में कई शानदार फिल्में की हैं। अपने करियर के पीक समय में उन्होंने बॉलीवुड छोड़ दिया था और हॉलीवुड का रुख किया था। लेकिन अब प्रियंका चोपड़ा ने बड़ा खुलासा करते हुए कहा कि वे कभी बॉलीवुड छोड़ना नहीं चाहती थीं, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें हिंदी सिनेमा से बाहर मौके तलाशने के लिए 'पुश' किया।' बॉलीवुड से हॉलीवुड तक के अपने सफर पर बात करते हुए प्रियंका चोपड़ा ने खुलकर अपनी दिल की बात शेयर की। प्रियंका ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मैं कभी बॉलीवुड छोड़ना चाहती थी। लेकिन जब मैं हिंदी फिल्मों में काम कर रही थी, तो कई वजहों से खुद को थोड़ा सीमित महसूस करती थी। मैं अपने काम का दायरा बढ़ाना चाहती थी। एक कलाकार के तौर पर मैं कुछ नया और रोमांचक करना चाहती थी। इसी सोच ने मुझे दूसरे मौके तलाशने के लिए प्रेरित किया।' उन्होंने आगे कहा, 'इसी तलाश ने मुझे अमेरिका पहुंचाया। अब करीब 12 साल बाद मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं उस मुकाम पर हूं, जहां मैं अपने मनपसंद और बेहतरीन प्रोजेक्ट्स चुन सकती हूं। लेकिन यह सफर बिल्कुल आसान नहीं था।' उन्होंने आगे कहा, 'मुझे मेरी इंडियन फिल्मों से प्यार है। मैं बहुत खुश हूं कि वापस भारत में आकर वाराणसी फिल्म के लिए काम कर रही हूं। मैं कभी भी इन दोनों में से किसी एक को चुनना नहीं चाहूंगी। मैंने कभी ऐसा किया भी नहीं। मुझे लगता है कि मैं दोनों इंडस्ट्री के बीच संतुलन बनाकर चलती हूं और मुझे दोनों इंडस्ट्री में काम करना पसंद है। दोनों जगह काम करने का तरीका कई मायनों में अलग है, ठीक वैसे ही जैसे उनकी संस्कृतियां अलग होती हैं। लेकिन अब मेरा दिमाग दोनों तरीकों से सोचने का आदी हो चुका है। यह अपने आप में एक अनोखा, शानदार और मजेदार अनुभव है।'

बॉलीवुड | मसाला

# मैं शादीशुदा हूं ये भूल जाती हूं: तापसी

तापसी पन्नू अपनी शादी और पर्सनल जिंदगी को काफी सीक्रेट रखती हैं। उन्होंने पति मैथियास से शादी से पहले 13 साल तक डेट किया, लेकिन किसी को कानों कान खबर नहीं लगने दी। इसके बाद उन्होंने शादी भी बिना किसी हो-हल्ले के सिंपल तीरके से कर ली, जिसमें सिर्फ परिवार और करीबी ही शामिल हुए। अब हाल ही में तापसी ने बताया कि उन्हें किस तरह का रिलेशनशिप पसंद है और क्यों उन्होंने 13 साल बाद मैथियास को अपना हमसफर बनाया? एक्ट्रेस ने मैथियास के बारे में कहा कि उन्होंने मुझे कभी भी रिश्ते का बोझ महसूस नहीं होने दिया। शादी के बाद भी कुछ खास बदलाव नहीं आया। मैं लगभग भूल ही जाती हूं कि मैं शादीशुदा हूं। शादी से पहले मेरी सिर्फ एक ही शर्त थी कि शादी के बाद भी सब कुछ पहले जैसा ही रहे। एक्ट्रेस ने कहा कि मेरे लिए रिश्ते में सहजता और कंफर्ट सबसे महत्वपूर्ण रखता है। यही कारण है कि मैंने मैथियास से शादी की, क्योंकि उनमें एक सहजता है। मैथियास बो एक प्रसिद्ध और ओलंपिक पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। अब वो भारत में भी कई खिलाड़ियों को कोचिंग दे रहे हैं। तापसी ने बताया कि शादी के बाद वो डेनमार्क नहीं गईं, बल्कि मैथियास यहां भारत में रहने लगे। मैथियास से शादी को लेकर तापसी ने कहा कि उनकी सहजता ही इसकी वजह थी। कोई भावनात्मक बोझ नहीं था, कोई बाध्यता नहीं थी। मैं कभी नहीं चाहती थी कि शादी पहचान में बदलाव का एहसास कराए। मेरा मानना है कि अगर रिश्ते में बदलाव आता, तो इसे औपचारिक रूप देने का कोई मतलब नहीं होता। हमें सचमुच एक-दूसरे के साथ रहना पसंद है। तभी हमने आगे बढ़ने का फैसला किया। क्योंकि लॉन्ग डिस्टेंस रिलेशनशिप में कई चुनौतियां आ रही थीं।

**बोलीं- मैं नहीं चाहती शादी से रिश्ते में बदलाव आए**

# युवक को सांप के साथ रील बनाना पड़ा महंगा, किया अटैक

रील बनाकर वायरल होने और कुछ अलग करने का जुनून कभी-कभी जानलेवा भी साबित हो सकता है। ऐसा ही मामला सामने औरैया जिले के दयालपुर गांव से सामने आया है। जहां एक युवक ने सपेरे से सांप लेकर गले में डाल दिया। कुछ ही सेकेंड में सांप ने युवक को डस लिया, जिससे उसकी हालत गंभीर हो गई। गांव निवासी अमित पुत्र प्रेमलाल अपने घर के बाहर मौजूद था। तभी वहां पहुंचे एक सपेरे से उसने नाग लिया और उसे गले में डालकर प्रदर्शन करने लगा। ग्रामीणों के अनुसार युवक लोगों को चौंकाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन यह करतब उस पर भारी पड़ गया। गले में डाले जाने के तुरंत बाद सांप ने उसे हाथ मे डस लिया। आनन-फानन में परिजन अमित को लेकर जिला अस्पताल पहुंचे, जहां उसे भर्ती कर इलाज शुरू किया गया। डॉक्टरों के अनुसार युवक की हालत स्थिर है। गांव में इस घटना की खूब चर्चा है। लोग इसे बेवजह का जोखिम और लापरवाही बता रहे हैं। वहीं कुछ लोग इसे सोशल मीडिया के प्रभाव में आकर किया गया खतरनाक स्टंट कह रहे हैं। अश्लील कंटेंट बनाने के मामले में दो बार जेल की हवा खा चुका अरविंद नाम का युवक एक बार फिर से सांप के साथ क्रूरता कर रील बनाने के मामले में वन विभाग के रडार पर आ गया है। अभियुक्त अरविंद पर वन्य जीव एक्ट क्रूरता अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। साथ ही वन विभाग आरोपी युवक की तलाश में जुट गई है। सोशल मीडिया पर युवक द्वारा पोस्ट किए गए वीडियो में वह दुर्लभ प्रजाति के सांप के साथ खिलवाड़ नजर आ रहा है। पहले दो मामले में आसानी से रिहा होने में सफल रहा अरविंद इस बार बड़ी मुश्किल में फंसता नजर आ रहा है। अरविंद नाम का यह युवक गोला गोकर्णनाथ स्थित कस्बे में रेडीमेड गारमेंट्स की दुकान चलाता है।

अजब-गजब | बिना डीजे और घोड़ी के ही दुल्हन लेकर जाऊंगा

# गंगा की प्रचंड लहरों में नाव से पहुंचा दूल्हा

बलिया में एक अनोखा नजारा सामने आया। जब हाथी, घोड़े बैंड बाजा के साथ नहीं बल्कि सादगी पूर्ण तरीके गंगा किनारे दूल्हे राजा नाव से उतरे। दरअसल बलिया से लेकर बिहार के बक्सर जिला में आई बाढ़ की विभीषिका के बीच एक उत्सवी माहौल देखने को मिला। बक्सर के सिमरी दियारा क्षेत्र में, जहां गंगा नदी के उफान और बाढ़ के पानी से घिरे इलाके में एक अनोखी बरात निकली। सड़कें डूब चुकी हैं, लेकिन शादी रद्द नहीं हुई। मंगलवार को दूल्हा और बाराती नाव पर सवार होकर दुल्हन के घर बलिया के बेयासी पहुंचे। यह अनोखी बारात नैनीजोर लाल डेरा गांव के रहने वाले कमलेश राम के पुत्र राजेश कुमार की थी।

राजेश की शादी बलिया जिले के बेयासी गांव विरेन्द्र राम के यहां तय थी। सब तैयारी पहले से हो चुकी थी, लेकिन अचानक बाढ़ ने सारे रास्ते बंद कर दिए। गांव के लोगों ने देखा यह नजारा गंगा के ऊफान के कारण सड़क मार्ग पूरी तरह जलमग्न हो गया, ऐसे में बारात को टालना या रद्द करना मुश्किल था। इस विषम परिस्थिति में परिवार ने नाव से बरात ले जाने का फैसला किया। जब गांव के लोगों ने पहली बार एक अद्भुत नजारा देखा। गंगौली गांव के पास तटबंध के नीचे से एक सजी-धजी नाव पर बरात निकल रही थी। दूल्हा साफा पहने, पारंपरिक पोशाक में नाव पर बैठा था और उसके साथ बराती भी उसी जोश के साथ मौजूद थे। नाव पर कोई डीजे नहीं था, न ही बैंड-बाजा, लेकिन गंगा की लहरों की थपकी और नाविकों की ताल ने माहौल को खास बना दिया। लोगों ने अपने मोबाइल से इस खास बारात की फोटो और वीडियो बनाई और सोशल मीडिया पर शेयर करना शुरू कर दिया। देखते ही देखते यह बारात इलाके में चर्चा का विषय बन गई। दूल्हे के पिता कमलेश राम ने बताया कि शादी की तारीख पहले से तय थी और रद्द करना हमारे लिए संभव नहीं था। इसलिए हमने नाव से बारात ले जाने का निर्णय लिया।

## यह भव्य आयोजन परिवर्तन की दस्तक है

नेट ज़ीरो सरोजनीनगर केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक क्रांति है

यह भव्य आयोजन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि जब नेतृत्व दूरदर्शी, समर्पित और जनहित के प्रति प्रतिबद्ध हो, तो परिवर्तन अवश्यंभावी होता है। नेट ज़ीरो सरोजनीनगर केवल एक अभियान नहीं, बल्कि एक क्रांति है–एक ऐसी क्रांति, जो पर्यावरण संरक्षण, युवा सशक्तिकरण और जनभागीदारी के माध्यम से सरोजनीनगर को विकास और समृद्धि के नए शिखर पर पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। यह पहल न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि पूरे देश के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बनने की क्षमता रखती है।

# लखनऊ में 'मुन्ना भाई' का जलवा

# संजय दत्त संग राजेश्वर सिंह का रोड शो

# सड़कों पर उमड़ा सैलाब

## सरोजनीनगर मेरा परिवार : राजेश्वर

डॉ. राजेश्वर सिंह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण और युवा सशक्तिकरण उनके जीवन के दो सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय हैं। उन्होंने सरोजनीनगर को अपना परिवार बताते हुए संकल्प लिया कि इस क्षेत्र को एक आदर्श और मॉडल विधानसभा के रूप में विकसित किया जाएगा, जहां विकास और पर्यावरण संरक्षण साथ-साथ चलेंगे। उनका यह विज़न केवल शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि नेट ज़ीरो सरोजनीनगर जैसे ठोस और क्रांतिकारी अभियान के रूप में मूर्त रूप ले चुका है। उन्होंने कहा कि यह अभियान छह व्यापक और प्रभावशाली आयामों नेट ज़ीरो स्कूल्स एंड कॉलेजेस, नेट ज़ीरो सोसाइटीज़ एंड आरडब्ल्यूएज़, नेट ज़ीरो टाउनशिप्स, नेट ज़ीरो इंडस्ट्री, नेट ज़ीरो विलेजेस एंड सरोवर्स तथा नेट ज़ीरो पॉलिसी सजेशन एंड इम्प्लीमेंटेशन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को जनभागीदारी से जोड़ते हुए एक स्थायी समाधान की दिशा में अग्रसर है। उनके मुताबिक यह पहल न केवल पर्यावरणीय संतुलन स्थापित करेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वच्छ भविष्य सुनिश्चित करेगी।

### » पर्यावरणीय क्रांति का केंद्र बना सरोजनी नगर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ के सरोजनीनगर में बीता दिन इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में दर्ज हो गया जब दूरदर्शी नेतृत्व, जनसरोकारों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता और पर्यावरण संरक्षण के संकल्प ने एक विराट जनआंदोलन का रूप ले लिया। सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र के बंगला बाजार में नेट ज़ीरो सरोजनीनगर अभियान का भव्य शुभारंभ विधायक राजेश्वर सिंह के मार्गदर्शन और बालीवुड अभिनेता संजय दत्त की उपस्थिति में हुआ। यह सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण देने की दिशा में उठाया गया ऐतिहासिक और दूरगामी कदम साबित हुआ।

इस अभूतपूर्व आयोजन में बीस हजार से अधिक नागरिकों, युवाओं, शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने यह साबित कर दिया कि जब नेतृत्व सशक्त, ईमानदार और दूरदर्शी हो, तो जनता स्वयं उसे जनआंदोलन बना देती है। बंगला बाजार की सड़कों पर उमड़ा जनसैलाब इस बात का साक्षी बना कि सरोजनीनगर अब सिर्फ एक विधानसभा क्षेत्र नहीं बल्कि पर्यावरणीय क्रांति का केंद्र बन चुका है। कार्यक्रम का सबसे आकर्षक और प्रेरणादायी क्षण वह ऐतिहासिक रोड शो रहा जिसमें संजय दत्त और डा. राजेश्वर सिंह ने लगभग एक किलोमीटर तक हजारों नागरिकों के साथ कदम से कदम मिलाकर पर्यावरण संरक्षण और युवा सशक्तिकरण का संदेश दिया। संजय दत्त ने अपने विशिष्ट और प्रभावशाली अंदाज में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि ओए मामू जिंदगी में तीन काम करने का–पौधा लगाने का, पानी बचाने का क्योंकि जल सोना है, और वोटर बनकर वोट डालने का। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वास्तविक जीवन के नायक वह जनप्रतिनिधि होते हैं जो समाज के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए समर्पित रहते हैं और डॉ. राजेश्वर सिंह ऐसे ही सच्चे नायक हैं जो अपने क्षेत्र के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं।

### एनवायरनमेंट वॉरियर्स के रूप में सम्मानित किया गया

कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को एनवायरनमेंट वॉरियर्स सम्मान से सम्मानित किया गया, जिससे यह संदेश गया कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने वाले हर व्यक्ति का सम्मान और प्रोत्साहन आवश्यक है। साथ ही, पर्यावरण जागरूकता विवज के विजेताओं को लाखों रुपये की पुरस्कार राशि देकर युवाओं को ज्ञान, जागरूकता और जिम्मेदारी की दिशा में प्रेरित किया गया। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह रहा कि युवाओं को लोकतंत्र की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए डेमोक्रेसी चैंपियंस की घोषणा की गई, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि डॉ. राजेश्वर सिंह का नेतृत्व केवल विकास तक सीमित नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

## भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच टीवीके की बैठक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। टीवीके के अध्यक्ष विजय आज वेल्लोर में पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित करेंगे। इस कार्यक्रम को सुचारू और सुरक्षित बनाने के लिए व्यवस्थाएं की गई हैं। इसके साथ ही सख्त प्रोटोकॉल लागू किए गए हैं। यह कार्यक्रम दोपहर 12 बजे से तीन बजे तक कोल्लमंगलम में आयोजित की जाएगी।

लगभग 4,900 कार्यकारी सदस्यों को बैठक में शामिल होने की अनुमति मिली है। इस कार्यक्रम में केवल उन्हीं लोगों को प्रवेश दी जाएगी, जिनके पास क्यूआर कोड वाले विशेष प्रवेश टिकट होंगे। पार्टी पदाधिकारियों ने बताया कि क्यूआर कोड प्रणाली को प्रवेश प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने, भीड़भाड़ से बचने और यह सुनिश्चित करने के लिए शुरू किया गया है कि केवल अधिकृत कार्यकारी ही बंद कमरे में होने वाली बैठक में भाग लें।

# टी20 विश्वकप : दबाव में बिखरी भारतीय बल्लेबाजी

### » अफ्रीका के सामने बना तीसरा न्यूनतम स्कोर

### » इस हार से सेमीफाइनल में पहुंचने की राह भी हुई कठिन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अहमदाबाद। भारतीय क्रिकेट टीम को टी20 वर्ल्ड कप में उस बड़े झटके का सामना करना पड़ा जिसकी उम्मीद शायद ही किसी क्रिकेट प्रेमी ने की होगी। भारत क्रिकेट टीम सुपर 8 के बेहद अहम मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के खिलाफ अपने टी20 अंतरराष्ट्रीय इतिहास का तीसरा सबसे न्यूनतम स्कोर बना दिया। इस शर्मनाक बल्लेबाजी प्रदर्शन ने न सिर्फ मैच भारत से छीन लिया बल्कि सेमीफाइनल में पहुंचने की राह भी बेहद कठिन बना दी है।

नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। पिच पर बल्लेबाजी करना चुनौतीपूर्ण जरूर था, लेकिन भारतीय बल्लेबाज जिस तरह एक के बाद एक विकेट गंवाते चले गए, उसने टीम की तैयारी और रणनीति दोनों पर सवाल खड़े कर दिए। ओपनिंग जोड़ी से लेकर मध्यक्रम तक कोई भी बल्लेबाज टिककर खेल नहीं पाया। दक्षिण अफ्रीका ने लक्ष्य का पीछा करते हुए बेहद संयमित और पेशेवर प्रदर्शन किया। इस जीत के साथ दक्षिण अफ्रीका ने सेमीफाइनल की अपनी दावेदारी मजबूत कर ली, जबकि भारत की स्थिति अब बेहद नाजुक हो गई है। अब भारत को न सिर्फ अपने बाकी मैच जीतने होंगे, बल्कि अन्य टीमों के परिणामों पर भी निर्भर रहना पड़ेगा। बड़े टूर्नामेंट में इस तरह का प्रदर्शन यह दिखाता है कि टीम दबाव में खुद को संभाल नहीं सकी। खासकर बल्लेबाजी क्रम की अस्थिरता और रणनीतिक विफलता ने भारत की कमजोरियों को उजागर कर दिया है। यह वही टीम है जिसे टूर्नामेंट की प्रबल दावेदार माना जा रहा था, लेकिन इस प्रदर्शन ने उसकी स्थिति को कमजोर कर दिया है।

### भारत को करना होगा रणनीति पर विचार

क्रिकेट विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को अब अपनी रणनीति पर गंभीरता से पुनर्विचार करना होगा। बल्लेबाजों को पिच की परिस्थितियों के अनुसार खेलने की जरूरत है, जबकि टीम प्रबंधन को सही संयोजन और मानसिक तैयारी पर ध्यान देना होगा। बड़े टूर्नामेंट में छोटी गलतियां भी भारी पड़ती हैं, और भारत के साथ यही हुआ। अब भारतीय टीम के सामने करो या मरो की स्थिति बन गई है। सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए न सिर्फ जीत जरूरी है, बल्कि बेहतर नेट रन रेट भी अहम भूमिका निभाएगा। इस हार ने यह साफ कर दिया है कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कोई भी टीम छोटी नहीं होती और हर मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना ही सफलता की कुंजी है।

# मैक्सिको में 'एल मेंचो' ढेर देशभर में गैंगवार की आग

## » भारतीय दूतावास का अलर्ट कहा, घर से बाहर न निकलें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मैक्सिको इस वक्त बारूद के ढेर पर बैठा है। देश के सबसे खतरनाक ड्रग माफिया और जलिस्को न्यू जेनरेशन कार्टेल के सरगना नेमेसियो ओसेगुएरा सर्वांतेस उर्फ 'एल मेंचो' की सेना के हाथों मौत के बाद पूरे देश में हिंसा की लपटें फैल गई हैं। सड़कों पर गोलियों की गूंज है कई शहरों में आपराधिक गिरोहों और सुरक्षा बलों के बीच टकराव की खबरें आ रही हैं। हालात इतने विस्फोटक हो गए हैं कि भारत का दूतावास मैक्सिको सिटी को अपने नागरिकों के लिए आपातकालीन एडवाइजरी जारी करनी पड़ी है।

मैक्सिको की सेना ने रविवार को एक बड़े ऑपरेशन के दौरान 'एल मेंचो' को मार गिराया। यह वही नाम है जो पिछले एक दशक से मैक्सिको की अपराध दुनिया का सबसे बड़ा चेहरा बना हुआ था। 'एल मेंचो' के नेतृत्व में सीजेएनजी न सिर्फ ड्रग तस्करी, बल्कि हथियारों की तस्करी, अपहरण और हिंसक वारदातों के जरिए पूरे देश में खौफ का पर्याय बन चुका था। उसकी मौत के साथ ही कार्टेल का नेतृत्व अचानक खत्म हो गया लेकिन इसके साथ ही सत्ता की इस खाली जगह को भरने के लिए गैंगवार और बदले की आग भड़क उठी है।

### भारतीय दूतावास का अलर्ट

भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जारी चेतावनी में कहा है कि सुरक्षा अभियान लगातार जारी हैं और कई इलाकों में सड़क अवरोध, गोलीबारी और आपराधिक गतिविधियां बढ़ गई हैं। खासतौर पर जलिस्को, तमाउलिपास, मिचोआकान, गुएरेरो और नुएवो लियोन जैसे राज्यों में हालात बेहद संवेदनशील हैं। दूतावास ने साफ शब्दों में भारतीय नागरिकों से कहा है कि वह अगले आदेश तक सुरक्षित स्थानों पर ही रहें और बिना जरूरत घर से बाहर न निकलें। एडवाइजरी में यह भी कहा गया है कि नागरिक कानून प्रवर्तन एजेंसियों की गतिविधियों वाले क्षेत्रों से दूर रहें भीड़भाड़ वाली जगहों से बचें और अपने आसपास की गतिविधियों पर लगातार नजर रखें। स्थानीय मीडिया के जरिए ताजा अपडेट लेते रहने और किसी भी आपात स्थिति में तुरंत स्थानीय आपातकालीन नंबर 911 पर संपर्क करने की सलाह दी गई है। दूतावास ने भारतीय नागरिकों को अपने परिवार और दोस्तों को अपनी स्थिति के बारे में नियमित रूप से सूचित करने के लिए भी कहा है।

### इंडियंस के लिए हेल्पलाइन नम्बर (+52 55 4847 7539)

भारतीय नागरिकों की सुरक्षा को देखते हुए दूतावास ने एक हेल्पलाइन नंबर (+52 55 4847 7539) भी जारी किया है, ताकि जरूरत पड़ने पर तुरंत सहायता उपलब्ध कराई जा सके। दूतावास ने यह स्पष्ट किया है कि हालात तेजी से बदल रहे हैं और किसी भी नए खतरे की स्थिति में और कड़े निर्देश जारी किए जा सकते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि 'एल मेंचो' की मौत मैक्सिको के अपराध जगत में एक बड़ा मोड़ है। एक ओर सरकार इसे अपनी बड़ी सफलता बता रही है तो दूसरी ओर यह आशंका भी बढ़ गई है कि अब कार्टेल के भीतर और अलग-अलग गैंगों के बीच खूनी संघर्ष और तेज हो सकता है। इसका सीधा असर आम नागरिकों और विदेशी नागरिकों की सुरक्षा पर पड़ सकता है। फिलहाल, मैक्सिको में हालात बेहद तनावपूर्ण हैं। सड़कों पर सेना की मौजूदगी बढ़ा दी गई है, लेकिन डर का साया अब भी कायम है। भारतीय नागरिकों के लिए जारी एडवाइजरी इस बात का संकेत है कि खतरा वास्तविक और गंभीर है-और इस समय सबसे सुरक्षित कदम है सतर्क रहना और सुरक्षित स्थानों पर ही ठहरना।

## त्रिशूली नदी बनी मौत की खाई

# नेपाल में बस हादसे ने छीनी 18 जिंदगियां

## » चीखों और मलबे के बीच जिंदगी की जंग लड़ रहे 27 यात्री

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेनीघाट। नेपाल की शांत वादियों में आज सुबह उस समय मातम पसर गया,? जब यात्रियों से भरी एक बस अनियंत्रित होकर त्रिशूली नदी में जा गिरी। इस भीषण हादसे में कम से कम 18 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई जबकि 27 अन्य यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। मरने वालों में 6 महिलाएं भी शामिल हैं जिससे हादसे की त्रासदी और भी भयावह हो गई है। यह दुर्घटना नेपाल के धादिंग जिले में बेनीघाट रोरंग ग्रामीण नगरपालिका के वार्ड-3 स्थित चरौंडी इलाके के पास चिनाधारा में तड़के करीब 1:15 बजे हुई जब बस पोखरा से राजधानी काठमांडू की ओर जा रही थी।

प्रत्यक्षदर्शियों और पुलिस अधिकारियों के अनुसार, बस अचानक नियंत्रण खो बैठी और सीधे गहरी त्रिशूली नदी में जा गिरी। नदी में गिरते ही बस पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और यात्रियों के बीच चीख-पुकार मच गई। अंधेरे और तेज बहाव के कारण राहत और बचाव कार्य में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। स्थानीय ग्रामीणों ने सबसे पहले घटनास्थल पर पहुंचकर राहत कार्य शुरू किया और कई यात्रियों को नदी से बाहर निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धादिंग जिला ट्रैफिक पुलिस के अधिकारियों ने पुष्टि की कि हादसे में 18 लोगों की जान चली गई है, जिनमें 6 महिलाएं और 12 पुरुष शामिल हैं।

### घंटों चला राहत बचाव कार्य

राहत और बचाव अभियान कई घंटों तक चला, जिसमें स्थानीय प्रशासन, पुलिस और बचाव दलों ने संयुक्त रूप से काम किया। तेज बहाव और अंधेरे के कारण बस तक पहुंचना बेहद चुनौतीपूर्ण था। बचाव दलों को नदी के भीतर उतरकर क्षतिग्रस्त बस से यात्रियों को बाहर निकालना पड़ा। इस दौरान कई दिल दहला देने वाले दृश्य सामने आए, जहां घायल यात्री दर्द से कराहते हुए मदद की गुहार लगा रहे थे। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि बस चालक ने किसी तकनीकी खराबी या सड़क की खराब स्थिति के कारण नियंत्रण खो दिया, जिससे यह हादसा हुआ। हालांकि, दुर्घटना के सही कारणों का पता लगाने के लिए विस्तृत जांच शुरू कर दी गई है। अधिकारियों ने कहा है कि हादसे के हर पहलू की जांच की जाएगी और जिम्मेदार पाए जाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

# आंध्र प्रदेश में मिलावटी दूध पीने से चार लोगों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अमरावती। आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी शहर में दो दिन में मिलावटी दूध पीने के कारण 4 लोगों की मौत हो गई है। कई लोग अस्पताल में भर्ती हैं। ये सभी लोग पेशाब (एनुरिया) नहीं होने की समस्या होने पर अस्पताल में भर्ती कराए गए थे।

जानकारी के मुताबिक, रविवार रात को हॉस्पिटल में इलाज करा रहे दो लोगों की मौत हो गई। इनकी पहचान एस. शेषगिरी राव (72) और राधा कृष्णमूर्ति (74) के तौर पर हुई है, जबकि तीन लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है। इससे पहले दो लोगों की मौत हो चुकी है। ये सभी पीड़ित ईस्ट गोदावरी जिले के राजमुंदरी शहर के लाला चेरुवु और चौदेश्वरी नगर इलाकों के रहने वाले हैं। स्थानीय प्रशासन के मुताबिक, 15 फरवरी से अब तक कम से कम 14 लोगों को एनुरिया के लक्षणों के साथ अलग-अलग हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। इनमें एक ही परिवार के चार सदस्य शामिल हैं। सभी प्रभावित परिवारों का दूध बेचने वाला एक ही है, इसलिए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को शक है कि दूध में मिलावट की वजह से एनुरिया हुआ है। पीड़ित ज्यादातर बुजुर्ग हैं। बीमार हुए लोगों में एक तीन साल का बच्चा और एक पांच महीने का शिशु भी शामिल है।

# तृणमूल संस्थापक मुकुल राय का निधन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पूर्व केंद्रीय रेल मंत्री और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के वरिष्ठ नेता मुकुल रॉय का आज कोलकाता के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 71 वर्ष के थे। उनके बेटे शुभ्रांशु रॉय ने बताया कि मुकुल रॉय पिछले कई दिनों से कोमा में थे और सोमवार तड़के 1:30 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। मुकुल रॉय लंबे समय से बीमार चल रहे थे और हाल के वर्षों में सक्रिय राजनीति से दूर हो गए थे।

मुकुल रॉय ने 1998 में तृणमूल कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इससे पहले वह कांग्रेस के सदस्य थे। 2017 में पार्टी से मतभेद के बाद उन्होंने भाजपा का दामन थामा और राज्यसभा से इस्तीफा दे दिया। 2021 के विधानसभा चुनाव में वे भाजपा के टिकट पर कृष्णानगर उत्तर से विधायक बने लेकिन चुनाव के बाद टीएमसी में लौट आए।

### टीएमसी के रणनीतिकार रहे

मुकुल रॉय को टीएमसी के रणनीतिकार के रूप में जाना जाता था और 2011 के विधानसभा चुनाव में पार्टी की ऐतिहासिक जीत में उनकी अहम भूमिका रही। 2012 में वे केंद्र सरकार में रेल मंत्री बने हालांकि उनका कार्यकाल केवल मार्च से सितंबर तक रहा। बाद में नारदा स्टिंग ऑपरेशन विवाद के चलते पार्टी में उनका प्रभाव कम हुआ और 2017 में उन्हें निष्कासित कर दिया गया।

### शिपिंग राज्य मंत्री के तौर पर भी किया काम

मुकुल रॉय ने 2009 से 2011 तक केंद्रीय शिपिंग राज्य मंत्री के रूप में भी कार्य किया 2021 में भाजपा के टिकट पर विधायक बनने के बाद उन्होंने टीएमसी में वापसी की, जिससे उनके खिलाफ दलबदल कानून के तहत अयोग्यता की कार्यवाही शुरू हुई। नवंबर 2025 में कलकत्ता हाईकोर्ट ने उन्हें विधायक पद से अयोग्य घोषित किया, लेकिन जनवरी 2026 में सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश पर रोक लगा दी।

# झारखंड का शहरी संग्राम, 48 नगर निकायों में मतदान

## » मतदान को लेकर उत्साह 6 हजार से अधिक प्रत्याशियों की किस्मत लिखेंगे 43 लाख वोटर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड के 48 शहरी निकायों में सत्ता की नई तस्वीर गढ़ने के लिए आज सुबह सात बजे से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मतदान चल रहा है। लोकतंत्र के इस महापर्व में राज्य के 4,304 मतदान केंद्रों पर मतदाताओं का उत्साह साफ दिखाई दे रहा है। सुबह से ही बूथों के बाहर लंबी कतारें लग गईं, जिनमें युवाओं से लेकर बुजुर्गों और महिलाओं की बड़ी भागीदारी ने यह संकेत दे दिया कि शहरी सरकार की बागडोर इस बार जनभागीदारी के दम पर तय होगी।

इस चुनाव में मेयर और अध्यक्ष पद के लिए 562 से अधिक उम्मीदवार मैदान में हैं, जबकि वार्ड पार्षद के 5,562 प्रत्याशी अपनी राजनीतिक किस्मत आजमा रहे हैं। 16 निकायों के 38 वार्डों में उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हो चुके हैं, लेकिन बाकी सीटों पर कड़ा मुकाबला देखने को मिल रहा है। कुल मिलाकर 1,087 वार्डों और विभिन्न पदों पर 8,678 प्रत्याशियों का भविष्य आज ईवीएम में कैद हो रहा है। यह चुनाव न केवल स्थानीय नेतृत्व तय करेगा, बल्कि आने वाले समय में राज्य की राजनीति की दिशा भी संकेत करेगा।

### झारखंड में रिकार्ड होता है मतदान

राज्य के कुल 43,33,574 मतदाता इस चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 22,07,203 पुरुष, 21,26,227 महिलाएं और 144 थर्ड जेंडर मतदाता शामिल हैं। मतदान शाम पांच बजे तक जारी रहेगा, जबकि मतगणना 27 फरवरी को सुबह आठ बजे से शुरू होगी। खास बात यह है कि यह चुनाव गैर-दलीय आधार पर हो रहा है, लेकिन राजनीतिक दलों ने अपने समर्थित उम्मीदवारों को मैदान में उतारकर इसे प्रतिष्ठा की लड़ाई बना दिया है। यही वजह है कि स्थानीय चुनाव होने के बावजूद इसका राजनीतिक तापमान विधानसभा चुनाव जैसा महसूस किया जा रहा है। राज्य के प्रमुख नगर निगमों-रांची, धनबाद, देवघर, आदित्यपुर, चास, मेदिनीनगर, हजारीबाग, गिरिडीह और मानगो-के अलावा 20 नगर परिषद और 19 नगर पंचायतों में मतदान हो रहा है। इन शहरी निकायों में जीत का मतलब सिर्फ स्थानीय प्रशासन पर नियंत्रण नहीं, बल्कि भविष्य की राजनीतिक ताकत का आधार तैयार करना भी है। यही कारण है कि नेताओं ने चुनाव प्रचार में पूरी ताकत झोंक दी थी।

### सुरक्षा के व्यापक इंतजाम

मतदान प्रक्रिया को शांतिपूर्ण और निष्पक्ष बनाने के लिए प्रशासन ने व्यापक सुरक्षा इंतजाम किए हैं। संवेदनशील क्षेत्रों में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है और कई इलाकों में ड्रोन से निगरानी की जा रही है। चुनाव के दौरान संबंधित क्षेत्रों में ड्राई डे घोषित किया गया है और शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। झारखंड राज्य निर्वाचन आयोग ने जिला अधिकारियों को हर दो घंटे में स्थिति रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए हैं। साथ ही किसी भी गड़बड़ी या शिकायत के लिए हेल्पलाइन और कंट्रोल रूम भी सक्रिय कर दिए गए हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा